फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

हमारा प्रयास 'मजदूर समाचार' की महीने में 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का है। इच्छा अनुसार रुपये-पैसे के योगदान का स्वागत है।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी फरीदाबाद — 121001

नई सीरीज नम्बर 254 1/- अगस्त 2009

रफ्तार और स्वास्थ्य

जल्दी का आज बोलबाला है। गति, तीव्र गति, तीव्रतर गति का महिमामण्डन सामाजिक पागलपन का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। थल, जल, नभ और इन सब के पार अन्तरिक्ष तथा अन्तरिक्ष से भी परे के लिये तीव्र से तीव्रतर वाहनों का निर्माण आज मानवों की प्रमुख गतिविधियों में है। शीघ्र तैयार होती फसलें और पशु-पक्षियों का माँस जल्दी बढाना आम बात बन गये हैं।.... मानव अपने स्वयं के शरीरों की रफ्तार बढाने में जुटे हैं। और, मस्तिष्क की गति, तीव्र गति, तीव्रतर गति ने मुक्ति-मोक्ष का आसन ग्रहण कर लिया है।

प्रकृति के पार जा कर हम गति के उत्पादन में जुट गये हैं। रफ्तार की कई किस्में हैं। हर प्रकार की गति का उत्पादन एक अनन्त तांडव है। रफ्तार बढाना तांडवों की वी भत्सता बढाना लिये है। गति के उत्पादन पर विचार करने की अति आवश्यकता को महसूस करने के लिये स्वास्थ्य पर पड़ते रफ्तार के प्रभावों के कुछ पहलू देखें।

●अपनी देखभाल के लिये मानव शरीर में एक जटिल ताना-बाना है। शरीर में अनेक रक्षा-प्रणालियाँ हैं। उत्तेजना की ही बात करें तो एडरीनल ग्रन्थी में इस पर नियन्त्रण के लिये दो भाग होते हैं — एक तत्काल के लिये तो दूसरा दीर्घ अवधी के लिये रसायन (स्ट्रेस होरमोन) उपलब्ध कराता है। आम बात है कि उत्तेजना मानव शरीर की सामान्य अवस्था नहीं रही है। लेकिन इधर समय पर पहुँचना, निर्धारित समय सीमा में कार्य पूरा करना दैनिक जीवनचर्या बन गई है। इसके लिये आवश्यक तन तथा मस्तिष्क की गति प्रत्येक के लिये जीवन-मरण के प्रश्न के रूप में उपस्थित है। आवश्यक गति का निर्धारण श्रृंखला, सामाजिक श्रृंखला करती है। यह गति बढती रहती है और श्रृंखला से छिटक दिये जाने, नाकारा बना दिये जाने का डर चाबुक का कार्य करता है। ऐसे में प्रत्येक का तन तथा मस्तिष्क हर रोज बहुत समय तक उत्तेजना की स्थिति में रहते हैं। इससे होता यह है कि शरीर की पूरी ऊर्जा दैनिक उत्तेजना के नियन्त्रण पर केन्द्रित हो जाती है। इस कारण शरीर की अन्य रक्षा-प्रणालियों को आवश्यक ऊर्जा-साधनों की पूर्ति शरीर नहीं कर पाता। रक्षा-प्रणालियों का कमजोर होना बीमारियों की सम्भावना बढा देता है। इसलिये जो जीवाणु सहज रूप से शरीर में रह रहे होते हैं और हमारे जीने के लिये आवश्यक हैं, उन्हीं जीवाणुओं से कई प्रकार की बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। घड़ी, जी हाँ घड़ी, स्वास्थ्य की कब्र खोदती है।

●हमारी माँसपेशियाँ और जोड़ अनेक प्रकार की गतिविधियों के अनुरूप हैं। पेड़ पर अठखेलियाँ करते बन्दर के बच्चे को उदाहरण के तौर पर देख सकते हैं। लेकिन गति का उत्पादन, तीव्रतर गति का उत्पादन एक ही क्रिया का बार-बार दोहराना लिये है। हम में से किसी की माँसपेशियों व जोड़ों पर हर रोज काफी समय तक अत्याधिक दबाव होता है तो किसी की माँसपेशियाँ व जोड़ सामान्य तौर पर शिथिल रहने को अभिशप्त हैं। लगातार खड़े-खड़े बारम्बार एक जैसा कार्य हो चाहे बैठे-बैठे मात्र हाथ चलाना, पसीने में भीगे रहना हो या फिर पसीना ही नहीं आना, हम में से अधिकतर का दैनिक जीवन इन दो धुरियों के इर्द-गिर्द घूमता है (ठहरा रहता है कहना अधिक सटीक होगा)। परिणाम है जोड़ों की बीमारियाँ और माँसपेशियों के दर्द की बाढ। जाँघों, घुटनों, पिण्डलियों, हाथ, कँधा, कमर के दर्द की महामारी रफ्तार, ज्यादा रफ्तार की उपज है।

●मानवों पर जीवाणुओं के आक्रमणों का बढना तथा व्यापक स्तर पर फैलना गति की, तीव्र गति की एक और महिमा है। एक शरीर के आवागमन के दायरे में सामान्य तौर पर जो जीवाणु पाये जाते हैं उनसे निपटने की क्षमता शरीर में प्राकृतिक तौर पर विकसित हुई। बल्कि, यह कहना चाहिये कि मानव शरीर का अपने इर्द-गिर्द वाले तथा स्वयं शरीर में निवास करते जीवाणुओं के साथ समन्वय रहा है। शरीर के अन्दर वाले जीवाणुओं से समन्वय टूटने की चर्चा कर चुके हैं। बढती गति द्वारा पृथ्वी को एक गाँव में बदल देने की बात देखिये। वाहनों में वायुयान को ही लें। फरीदाबाद जिले के एक गाँव में रहते व्यक्ति का शरीर वहाँ के जीवाणुओं के संग सहज जीवन आमतौर पर व्यतीत करता है। उस व्यक्ति का सिंगापुर या अमरीका जाना उसके शरीर को ऐसे जीवाणुओं के सम्पर्क में लाता है जिनके साथ समन्वय स्थापित करने की क्षमता उसके शरीर में नहीं है। वह गति, तीव्र गति द्वारा उत्पन्न बीमारी का शिकार बनती-बनता है। परन्तु बात इतनी ही नहीं है। यहाँ से अमरीका गया व्यक्ति अपने संग यहाँ के जीवाणु ले जाता है और अमरीका से यहाँ आती व्यक्ति अपने संग वहाँ के जीवाणु लाती है। दोनों जगह नई-नई बीमारियों के बीज बोना, बल्कि बीज फैलाना। गति का, तीव्रतर गति का उत्पादन अपने में नगर-महानगर लिये है। गति, तीव्र गति अपने में विद्यालय-महाविद्यालय, मैट्रो-बस-रेल-वायुयान से अनेकों द्वारा संग-संग यात्रा, बड़ी इमारतों में निवास तथा कार्यालय, और मॉल-बाजार में भीड़ लिये है। इन सब ने छींक अथवा खाँसी से फैलने वाली बीमारियों की अपार सम्भावनायें पैदा कर दी हैं।

●तीव्रतर गति के उत्पादन के लिये नये रसायनों की आवश्यकता पड़ती है। गति के प्राप्त स्तर को बनाये रखने के लिये भारी मात्रा में रसायनों की जरूरत रहती है। मानव निर्मित रसायनों की एक पूरी नई दुनियाँ है। इन डेढ-दो सौ वर्षों में बहुत बड़ी सँख्या में नये रसायन पैदा किये गये हैं। और, कैन्सर पैदा करने में इन रसायनों की प्रमुख भूमिका है। जल्दी और अधिक फसल के लिये बीजों में परिवर्तन, रासायनिक खाद, कीटनाशक, खरपतवारनाशक कैन्सर तथा अन्य नये रोगों को गाँव-गाँव तक फैला रहे हैं।

●शरीर स्वयं समर्थ है अपनी मरम्मत करने में। छिल जाने, कटने, चोट लगने का उपचार करना शरीर की सामान्य क्रिया है। लेकिन, लेकिन गति, तीव्रतर गति के संग जो चोट जुड़ी हैं उनके सम्मुख शरीर लाचार-सा हो जाता है। शरीर के पास स्वयं को ठीक करने के लिये समय भी नहीं छोड़ा जाता। पाँच हजार वर्ष में विश्व-भर के सब युद्धों में जितने लोग मरे हैं उन से ज्यादा इन सौ वर्षों में सड़कों पर वाहनों की चपेट में मरे हैं। भारत की ही बात करें तो 1948, 1962, 1965, 1971, 1999 के युद्धों और 60 वर्ष की सब "आतंकवादी" कार्रवाइयों में जितने लोग मरे हैं उन से ज्यादा लोग पिछले वर्ष सड़क "दुर्घटनाओं" में मरे। भारत सरकार के क्षेत्र में 2008 में सड़कों-वाहनों ने एक लाख की जान ली, दस लाख लोग अपंग किये, चालीस लाख लोग कुछ समय के लिये नाकारा किये। परन्तु कार्यस्थलों (ड्राइवर वाले से विलग) को देखते हैं तो सड़कें भी कम लहू बहाती नजर आती हैं। गति द्वारा कार्यस्थलों पर हत्या करना, घायल करना, बीमार करना के आँकड़े छिपाये जाते हैं, बहुत ज्यादा घटा कर बताये जाते हैं। कृषिक्षेत्र में गति का बढना, थ्रेशर-ट्रैक्टर-ट्युबवैल-बिजली स्वयं में एक गाथा लिये हैं, तांडव की गाथा लिये हैं। (जारी)

दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

कटलर हैमर मजदूर : "20/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में सीधे-सीधे उत्पादन कार्य में 5 ठेकेदारों के जरिये हम 1450 मजदूर रखे गये हैं और फिर सुरक्षा कर्मी, सफाई कर्मी, कैन्टीन वरकर, लकड़ी के बक्से बनाने-चिनाई-दीवार रंगाई के लिये मजदूर भी ठेकेदारों के जरिये कम्पनी रखती है। स्थाई मजदूर दो-ढाई सौ बचे हैं। हर वर्ष 31 मार्च को ब्रेक कर हमारी नई भर्ती करते हैं। मार्च 08 में हम में हैल्परों की तनखा 4000-4500 रुपये थी और ब्रेक के बाद अप्रैल 08 में नई भर्ती पर तनखा घटा कर 3665-4000 रुपये की, अब जून 09 में 3850-4500 रुपये है। विभाग अनुसार एक-दो-तीन शिफ्ट हैं। साँय 4½ छूटते हैं तब मुन्शी भाषण देते हैं – निकलने में पाँच-सवा पाँच हो जाते हैं और तनखा वाले दिन तो 6½-7 बज जाते हैं। भोजन अवकाश आधे घण्टे का है परन्तु 25 मिनट वाले हूटर पर मशीनों पर पहुँचो। सुपरवाइजर गाली देते हैं। पीने के पानी की समस्या रहती है – कभी पानी ही नहीं, कभी खारा, कभी ठण्डा नहीं। कैन्टीन में भोजन ठीक नहीं। शौचालय गन्दे। हाजिरी में गड़बड़ करते हैं – एक मजदूर के तो 650 रुपये खा गये। भर्ती के समय 5 कोरे कागजों पर भी हस्ताक्षर।"

फ्रेन्ज ऑटो श्रमिक : "प्लॉट 5 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में अभी काम कम है इसलिये सुबह 8 से रात 8 की शिफ्ट है – काम बढने पर लगातार 36 घण्टे भी काम। ओवर टाइम सिंगल रेट से। इस समय कम्पनी द्वारा भर्ती 50 हैं और 50 ही ठेकेदारों के जरिये रखे हैं, काम बढने पर 200 मजदूर हो जाते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखों की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं और कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती में 15 की ही। हैल्परों की तनखा 2600-2800 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले हैल्परों से हस्ताक्षर 3840 पर करवाते हैं जबकि देते 2800 रुपये तनखा हैं और इन 2800 में से 570 रुपये ई.एस.आई. व पी.एफ. के काटते हैं। जून की तनखा 17 जुलाई को दी। यहाँ ***जे सी बी, ई सी ई एल, एस्कोर्ट्स आर ई डी*** के पुर्जों के संग-संग सीमेन्ट प्लान्टों के पुर्जे ***ई एल इंडिया, बी एच पी, सैंडिवक, मैट्सो*** के लिये बनते हैं। कम्पनी स्वयं ***पोलो क्रेन*** नाम से ओवरहैड क्रेन बनाती है। शीट मैटल का काम है पर दस्ताने बहुत मुश्किल से देते हैं। वैल्डिंग, ग्राइन्डर, कटर का काम ज्यादा है, आँख में कचरा पड़ता रहता है पर फैक्ट्री में कोई आई ड्रॉप नहीं। चोट लगने पर डेटॉल तक नहीं। पावर प्रेस पर हाथ कटने पर प्रायवेट में उपचार करवा कर निकाल देते हैं। फैक्ट्री में पीने का पानी खराब। शौचालय गन्दे।"

पी.टेक कामगार : "प्लॉट 304 डी, सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में 37 मजदूर सुबह 8½ से साँय 7 की शिफ्ट में वाहनों के ब्रेक शू बनाते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में 8 पावर प्रेस हैं और पावर प्रेस ऑपरेटर एक है जो पावर प्रेस चलाता नहीं बल्कि डाई सैट करने तथा मेन्टेनैन्स का काम करता है। पावर प्रेस 2700-3300 रुपये तनखा में हैल्पर चलाते हैं। महीने में एक की उँगली तो कट ही जाती है। हाथ कटने पर प्रायवेट में उपचार बाद निकाल देते हैं। फैक्ट्री में शौचालय है ही नहीं।"

पी आई सी एल वरकर : "प्लॉट 99 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 14 स्थाई मजदूर और 5 ठेकेदारों के जरिये रखे 300 वरकर ए.सी. मोटर बनाते हैं। एक ठेकेदार के जरिये रखे 100 मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं, ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं पर इन्हें डी.ए. का एरियर और वार्षिक बोनस नहीं देते। अन्य ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2500-3200 रुपये। सीजन में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट रहती हैं। इस समय 12 घण्टे की एक शिफ्ट है और जबरन 15-18 घण्टे रोक लेते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से।"

रेवा इन्डस्ट्रीज मजदूर : "प्लॉट 28 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में ओवर हैड क्रेन बनाते 200 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2800 तथा ऑपरेटरों की 3000 रुपये। सुबह 9½ से रात 8½ तक रोज काम। साप्ताहिक छुट्टी नहीं।"

माइक्रोन इण्डिया श्रमिकः "प्लॉट 17 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में सी एन सी तथा लेथ ऑपरेटरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और बाकी मजदूरों की सुबह 8½ से रात 8½ की शिफ्ट है। सप्ताह में एक-दो बार 36 घण्टे लगातार काम करवाते हैं। महीने में 160-170 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ ***हीरो होण्डा, जे सी बी, एस्कोर्ट्स*** का काम होता है। नये हैल्परों की तनखा 3000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। पुराने हैल्परों की तनखा 2700 रुपये, और इन 2700 में से 300 रुपये ई.एस.आई. व पी.एफ. के नाम से काटते हैं।"

बिजली बोर्ड वर्कशॉप कामगार : "गुडईयर चौक पर स्थित सरकारी संस्थान में ठेकेदार के जरिये रखे 50 मजदूर मुख्यतः ट्रान्सफार्मर मरम्मत का कार्य करते हैं। हैल्परों की तनखा 2200 और कारीगरों की 3000-5100 रुपये।"

होराइजन प्लास्टिक वरकरः "प्लॉट 8 सैक्टर-5 स्थित फैक्ट्री में 40 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। यहाँ **एल जी इलेक्ट्रोनिक्स, मारुति सुजुकी** आदि का काम होता है।"

मंगला उद्योग मजदूर : "कुसलुपुर के पास धौलागढ मोड़, पलवल स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। जाँच वालों के आने पर दूसरे गेट से बाहर निकाल देते हैं।"

स्टर्लिंग टूल्स श्रमिक : "पृथला गाँव स्थित फैक्ट्री में 125 कैजुअल वरकरों की तनखा 3840 रुपये दिखाते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि के नाम पर 840 रुपये काट कर 3000 रुपये देते हैं।"

क्लास इण्डिया कामगार : "मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर सुबह 8 से रात 8½ और रात 8½ से अगली सुबह 7 बजे तक की दो शिफ्टों में काम करते हैं। शिफ्ट 15 दिन में बदलती है। रात को कैन्टीन बन्द रहती है, भोजन की कोई व्यवस्था नहीं। महीने में 60-100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान दुगुनी दर से। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को साबुन नहीं देते, पेन्टरों-वैल्डरों को मास्क नहीं देते। धमकियाँ देते रहते हैं।"

अरिहन्त इंजिनियरिंग मजदूर : "प्लॉट 113 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 14½-16½ घण्टे तो रोज रोकते ही हैं, लगातार 38½-40½ घण्टे भी जबरन काम करवाते हैं। महीने में 240 घण्टे तक ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ ***मारुति सुजुकी, हीरो होण्डा, बुलेट*** मोटरसाइकिल के स्टार्टर के कवर और होजिंग बनते हैं। डेढ सौ मजदूरों में 2-4 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। पावर प्रेस ही 45 हैं – हाथ कटते रहते हैं, प्रायवेट में उपचार बाद निकाल देते हैं। अन्य चोटों पर थोड़ा इलाज करवा कर कहते हैं अपने पैसों से करवाओ। हैल्परों की तनखा 2600-2800 और ऑपरेटरों की 3000-3200 रुपये। जून का वेतन 12-15 जुलाई को दिया। तनखा में 300-400 रुपये की गड़बड़ करते हैं। गाली देते हैं। माल खराब होने पर 500-1000 रुपये काट लेते हैं।"

सुरक्षा कर्मी

गार्ड : "नब्बे हजार गार्ड उपलब्ध कराने वाली ***ग्रुप फोर*** कम्पनी ई.एस.आई. राशि बेसिक व डी.ए. पर काटती है जबकि पी.एफ. की राशि सिर्फ बेसिक पर, 1900 रुपये पर ही काटती है।"

सुरक्षा कर्मी : "74/2 छतरपुर रोड़, मैदान गढी, दिल्ली में कार्यालय वाली ***पेन्टागोन सेक्युरिटी*** हम गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। रोज 12 घण्टे पर पूरे महीने के गार्डों को 3000-3500 और सुपरवाइजरों को 4000-4200 रुपये। महीने में 5-7 बार लगातार 36 घण्टे ड्युटी करनी पड़ती है। रोटी के लिये पैसे नहीं, ओवर टाइम सिंगल रेट से। ढाई सौ गार्डों में 20 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और इन मदों में जिनके 3 वर्ष पैसे काटे उनके 9 महीने के जमा किये। जून की तनखा कुछ को 15-16 जुलाई को दी और कुछ को आज 21 जुलाई तक नहीं दी है। गाली देते हैं, थप्पड़ भी।" ***गार्ड :*** "नीलम सिनेमा के पास एन एच 5 में कार्यालय वाली ***कॉन्टिनेटल सेक्युरिटी*** 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में गार्डों से ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 3500 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। तनखा देरी से, 22 तारीख तक। नौकरी छोड़ने पर 20-25 दिन के पैसे नहीं देते। गाली देते हैं, मारपीट भी।"

गुड़गाँव में मजदूर

महिला मजदूर : "211 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में दो ठेकेदारों के जरिये रखी हम 20 महिला धागे काटती थी। हमें 8 घण्टे के 95 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। रोज 10 घण्टे काम, ओवर टाइम सिंगल रेट से। काम नहीं है कह कर 10 जुलाई को हमें निकाल दिया। जून की तनखा और जुलाई के 10 दिन के पैसे अकेले-अकेले चक्कर काटने के बाद भी नहीं दिये। इस पर 20 जुलाई को हम इक्ट्ठी हो कर फैक्ट्री पहुँची। आज, 21 जुलाई को हमें पैसे लेने बुलाया है।"

कुरुबॉक्स लैदर श्रमिक : "कम्पनी की उद्योग विहार तथा मानेसर स्थित फैक्ट्रियों में एक हजार से ज्यादा मजदूर चमड़े के थैले और बटुये बनाते हैं। प्लॉट 37 सैक्टर-4, मानेसर वाली फैक्ट्री में जून की तनखा आज 21 जुलाई तक नहीं दी है। शिफ्ट सुबह 9 बजे आरम्भ होती है और आमतौर पर रात 11-12 तक काम करवाते हैं, रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करते हैं पर घण्टों में गड़बड़ करते हैं और महीने में 50 घण्टे तक खा जाते हैं।"

नीति क्लोथिंग कामगार : "218 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हाउसकीपिंग में हम 12 मजदूर सुबह 7½ से साँय 6 तक काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हम से सफाई के साथ हैल्परी करवाते हैं, पेन्ट करवाते हैं, माली का काम भी। और, गाली देते हैं।"

चिन्टू क्रियेशन वरकर : "295 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हम 500 मजदूरों से रोज सुबह 8 से रात 2 बजे तक काम करवाया जा रहा है – रविवार को सुबह 8 से रात 8 तक। अत्याधिक काम के कारण बीमार बहुत होते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। दो मिनट की देरी पर दो घण्टे के पैसे काट लेते हैं। छोड़ने पर 20-25 दिन के पैसे रोक लेते हैं – चक्कर कटवा कर कुछ पैसे देते हैं और कुछ को 'नुकसान किया' के नाम पर काट लेते हैं। कल, 20 जुलाई को एक महिला मजदूर अपने एक महीने के पैसे लेने आई तो 'पीस काट दिया' कह कर पैसे नहीं दिये और परसनल विभाग में थप्पड़ भी मारे। हैल्परों को देते 3600 रुपये हैं जबकि दिखाते 4200 हैं – टोकने पर कहते हैं कि करना है तो करो वर्ना जाओ। सिलाई कारीगर पीस रेट पर हैं और 8 घण्टे में 3000-4000 रुपये पडते हैं पर तनखा 7600 रुपये दिखाते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 4200 तथा 7600 अनुसार काटते हैं और कहते हैं कि कोई पूछे तो तनखा 4200 व 7600 रुपये बताना।"

अलंकार मजदूर : "410 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में धागे काटने वाले 60 मजदूरों (महिला व पुरुष) की तनखा 2500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। सिलाई कारीगरों के लिये निर्धारित उत्पादन बहुत अधिक – शौचालय जाने पर भी एतराज। जनरल मैनेजर गाली देता है, मार भी देता है। निधारित उत्पादन पूरा करने के नाम पर महीने में 40-50 घण्टे ओवर टाइम में से काट लेते हैं। सुबह 9 से रात 9, 1½, 2 बजे तक काम। ओवर टाइम सिंगल रेट से – रविवार के पैसे डेढ की दर से। यहाँ ***जगजग, स्पार्क*** आदि का माल बनता है।"

ईस्टर्न मेडिकिट श्रमिक : "उद्योग विहार स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में हम कैजुअल वरकरों को जून की तनखा 20 जुलाई को दी। हम 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, कभी 13 तो कभी 14 रुपये प्रतिघण्टा। मई में किये ओवर टाइम के पैसे 10 जुलाई को जा कर दिये।"

प्रिमियम मोल्डिंग कामगार : "185 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, रविवार को 8 घण्टे काम। ओवर टाइम के मात्र 6 रुपये प्रति घण्टा। यहाँ ***मारुति सुजुकी, टाटा*** तथा निर्यात के लिये वाहनों के स्टेयरिंग बनते हैं। हैल्परों की तनखा 3000-3500 रुपये।"

एस एण्ड आर एक्सपोर्ट वरकर : "298 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 8 की बजाय 11 घण्टे ड्युटी पर सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन। सरकारी अधिकारी पहले सूचना दे कर आते हैं और पैसे ले कर चले जाते हैं।"

कृष्णा लेबल्स मजदूर : "162 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 8 की बजाय 9½ घण्टे ड्युटी पर सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन। यहाँ ***ब्लैकबेरी*** के कोट-पैन्ट बनते हैं।"

स्पार्क एक्सपोर्ट श्रमिक : "166 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में शिफ्ट सुबह 9 बजे आरम्भ होती है और जनरल मैनेजर जबरन रात 2 बजे तक रोक लेता है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। जून की तनखा 19 जुलाई को दी। दो ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 3840 की बजाय 3665 रुपये।"

ऋचा ग्लोबल कामगार : "232 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में फिक्स वालों की ड्युटी का कोई समय नहीं है – कहने को सुबह 9½ से साँय 5½ की शिफ्ट है पर रात 10-11-12 बजे छोड़ते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से। गाली बहुत ज्यादा देते हैं।"

गौरव इन्टरनेशनल वरकर : "198 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में रोज सुबह 9 से रात 10 की ड्युटी। दो घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी का सिंगल रेट से। एक कप चाय भी 13 घण्टे में नहीं देते। पीने के पानी की दिक्कत। शौचालय के दरवाजे टूटे हैं।"

यूनिस्टाइल मजदूर : "140 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूरों को जून की तनखा आज 21 जुलाई तक नहीं दी है। धागे काटने और धुलाई करने वाले मजदूरों की तनखा 2800 रुपये। यहाँ ***सीएण्डे, न्यू वेसला*** आदि का काम होता है।"

पौलीपैक श्रमिक : " 194 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूरों को 20 दिन पर एक सवेतन छुट्टी और वार्षिक बोनस नहीं देते।"

दिल्ली में...*(पेज चार का शेष)*

द्वारा 4 स्थाई मजदूरों पर इस्तीफों के लिये दबाव और मजदूरों द्वारा इनकार.....

"वीयरवैल की डी-21/1 तथा डी-17/1 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्रियों से 25 जुलाई को कैजुअल वरकरों को निकालने लगे तो कैजुअल यह कह कर अड़ गये कि सीजन में तुम्हारे यहाँ काम किया, अब कहाँ जायेंगे। कम्पनी ने कैजुअलों से पार पाई और फिर स्थाई मजदूरों को निकालना शुरू किया। दोनो फैक्ट्रियों के 55 स्थाई मजदूर एक यूनियन से जुड़े। पहली अगस्त को पुलिस द्वारा गेट पर रोकने के बावजूद मजदूर फैक्ट्रियों के अन्दर गये। एक घण्टे बाद पुलिस ने बाहर निकाला........ कम्पनी ने हिसाब की राशि ढाई हजार रुपये बढाई....... वीयरवैल की फरीदाबाद में नई फैक्ट्री......"

मून स्टिचेज श्रमिक : " ए-113 डी डी ए शेड्स ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में फ्रान्स की एक कम्पनी का हाथ से कढाई का बहुत महँगा काम होता है। कुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन तथा पे-स्लिप देते हैं और ई.एस. आई. व पी.एफ. हैं। सुबह 9 से साँय 6 की शिफ्ट है पर अगली सुबह 6 तक रोक लेते हैं....... और फिर 9 बजे से ड्युटी ! अड्डे पर ही नींद में सिर पटक देते हैं। सुपरवाइजर द मैनेजर गाली देते हैं और बाल बराबर नुक्स पर शोरशराबा करते हैं, अड्डा उठा कर फेंक देते हैं। महीने में 50 से 150 घण्टे ओवर टाइम, पर दिखाते 15-20 घण्टे ही हैं जिनका भुगतान दुगुनी दर से और बाकी का सिंगल रेट से। रात 9 बजे बाद रोकते हैं तब 20 रुपये रोटी के लिये देते हैं। एक मिनट देर से पहुँचने पर वापस भेज देते हैं – बहुत ज्यादा यातायात के कारण महीने में दो-चार दिन देरी हो ही जाती है। बीस दिन पर बनती एक सवेतन छुट्टी नहीं देते। वार्षिक बोनस नहीं देते – दिवाली पर सादे कागज पर हस्ताक्षर करवा कर 100 रुपये व मिठाई पकड़ा देते हैं। एक कारीगर 19 मई को मेडिकल फिटनेस ले कर आया तो साहब बोले कि इसे नहीं मानते और धक्के मार कर बाहर कर दिया। कारीगरों ने एतराज किया तो बाकी 21 कारीगरों को भी बाहर कर दिया। यूनियन के पास गये – यूनियन पता नहीं है कि नहीं, एक वकील है और उसी ने लिखा-पढी की। श्रम निरीक्षक आया और 6 दिन बाद सब कारीगर अन्दर लिये पर 6 दिन के कोई पैसे नहीं दिये।"

बसन्त इण्डिया कामगार : " जी-4, बी-1 एक्सटैन्शन, मोहन को-ऑप इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, बदरपुर स्थित फैक्ट्री में हर महीने तनखा देरी से देते हैं। महीने में 80-100 घण्टे ओवर टाइम, सिंगल रेट से भी कम दर, मात्र 12½ रुपये प्रति घण्टा। और, मार्च-अप्रैल-मई-जून के ओवर टाम का भुगतान आज 20 जुलाई तक नहीं किया है। गालियाँ ऊपर से। ऐसे में जून की तनखा 17 जुलाई तक नहीं दी तो इलेक्ट्रोनिक्स पार्ट्स बनाते हम 90 मजदूरों ने सुबह काम बन्द कर दिया। मैनेजिंग डायरेक्टर ने दोपहर 2 बजे आ कर आश्वासन दिया तब 2½ बजे काम आरम्भ किया।"

बैंक कर्मी

एच डी एफ सी बैंक वरकर : "मुख्य मार्केट, सैक्टर-14, गुड़गाँव में एच डी एफ सी बैंक शाखा में चालू खाते और बचत खाते वाले ग्राहकों के जुगाड़ के लिये स्नातक तथा एम बी ए किये 100 वरकर रखे हैं। मासिक वेतन 6000 रुपये और यात्रा खर्च के लिये 2500 रुपये -- मोटरसाईकिल का प्रबन्ध वरकर स्वयं करें। ग्राहकों को फोन करने पर आते खर्च का वहन भी वरकर स्वयं करें। कहने को ड्युटी सुबह 9½ से साँय 5½ की है परन्तु 5½ बाद मीटिंग होती है जिसमें 'क्या किया?' तथा गाली-गलौज में रात के 9-10 बज जाते हैं। ओवर टाइम के कोई पैसे बैंक नहीं देता। ग्राहक बनाने के लिये निर्धारित की जाती सँख्या बहुत अधिक होती है, पूरी हो ही नहीं पाती -- मन्दी ने दिक्कतें और बढा दी हैं। ग्राहक बदतमीजी भी कर देते हैं -- सहन करनी पड़ती हैं। दिन-भर भागदौड़ और ऊपर से ए.एस.एच. अधिकारी बहुत ज्यादा गाली देता है। बात-बात में 'इस्तीफा दो' की धमकी। वरकर बहुत ज्यादा तनाव में काम करते हैं।"

ट्रान्सपोर्ट वरकर

बुकिंग-डिलीवरी बाबू : "फरीदाबाद में माल का आना-जाना बड़ी मात्रा में है। इस में ट्रक ट्रान्सपोर्ट की बड़ी भूमिका है। भारी तादाद में स्थानीय तथा बाहरी चालकों व खलासियों का आना-जाना लगा रहता है जबकि कार्यालयों में हम बाबू यहीं टिके रहते हैं। फरीदाबाद में बुकिंग बाबू तथा डिलीवरी बाबू चार हजार से ज्यादा हैं और रोज 12-14-16 घण्टे ड्युटी पर रहते हैं। ओवर टाइम के कोई पैसे नहीं। कोई खर्चा नहीं मिलता। पहले मुन्शीयाना मिलता था, वह भी बन्द कर दिया। प्रतिदिन 12-14-16 घण्टे कार्य पर महीने के 3500-4000 रुपये। ट्रान्सपोर्ट कार्यालयों में बाबूओं की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, वार्षिक बोनस नहीं।"

स्कूल कर्मी

विद्यालय कर्मचारी : "जीन्द जिले में मनोहरपुर स्थित ***गुरु द्रोणाचार्य पब्लिक स्कूल*** में कार्यरत 30 कर्मचारियों से सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन पर हस्ताक्षर करवाते हैं परन्तु कण्डक्टरों को 1500-1800 और ड्राइवरों को 2000-2500 रुपये देते हैं। रविवार को भी कार्यदिवस रहता है। पी.एफ. का प्रावधान है पर नौकरी छोड़ने पर कर्मचारी को फण्ड के पैसे मिलते नहीं।"

दिल्ली में मजदूर

वीयरवैल मजदूर : "बी-134 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हर रोज सुबह 9 से रात 1 तक जबरन रोकते थे। रात 9 बजे 1 घण्टा भोजन के लिये देते। बड़ा गेट बन्द कर, सख्त तलाशी के बाद छोटे गेट से निकालते। निकलने में 15 मिनट लग जाते। फिर ढाबे तक 15 मिनट लगते और वहाँ अन्य फैक्ट्रियों के मजदूर भी। भीड़ में कभी सब्जी, कभी रोटी का इन्तजार। लौटने में दो-चार मिनट देरी हो ही जाती। प्रवेश के समय फिर सख्ती से तलाशी। देरी के लिये डाँट। ऐसे में निकलते समय मजदूरों के बीच धक्कामुक्की और खटपट रोज की बात। आठ जुलाई को रात 9 बजे एक गार्ड ने लाठी चलाई और ठेकेदार के जरिये रखे 6 गार्ड उसकी सहायता के लिये आये तो सब गार्ड 400 वरकरों से पिटे। गार्ड पिटें चाहे सिलाई कारीगर पिटें, कम्पनी को उत्पादन से मतलब रहता है इसलिये रात सवा दस से फैक्ट्री में उत्पादन कार्य सामान्य तौर पर आरम्भ। हाँ, रात 12 बजे कम्पनी ने पुलिस बुलाई और पहले 6 तथा फिर 3 मजदूरों को निशाना बनाया। इस पर 400 वरकरों ने स्वयं को आगे किया तो पुलिस वाले चुपचाप फैक्ट्री से चले गये। बायर की जाँच थी अगले रोज इसलिये कम्पनी ने किसी वरकर का गेट नहीं रोका क्योंकि सब मजदूरों द्वारा काम बन्द कर देने का डर था। सवा सौ स्थाई मजदूर और ढाई सौ कैजुअल वरकर इस मामले में संग-संग थे। कम्पनी दस्तावेजों में ओवर टाइम दिखाती ही नहीं, साँय 5½ छुट्टी दिखाती है। कम्पनी ढाई सौ कैजुअल वरकरों को भी दस्तावेजों में दिखाती ही नहीं। चार सौ मजदूरों के सुबह 9 से रात 1 तक काम करने की जगह कागजों में सवा सौ मजदूरों को सुबह 9 से साँय 5½ तक काम करते दिखाया जाता है। ऐसे में गार्डों की पिटाई से मजदूरों पर ढीली हुई जकड़ की बहाली के लिये कम्पनी द्वारा 3 मजदूरों को पीटने के लिये पुलिस को पैसे देने की बातें..... मजदूरों द्वारा काम बन्द कर देने की चेतावनी। कम्पनी ने 9 जुलाई से रात 9 बजे छुट्टी करनी आरम्भ की और 13 जुलाई तक टोह लेती रही। फिर 14 जुलाई को दो इनचार्ज 4 मजदूरों के साथ थाने गये और राजीनामा हुआ -- पुलिस ने [illegible] भी रिश्वत ली। चार को निकालेंगे ही की चर्चा और 15 जुलाई से साँय 5½ ड्युटी समाप्त [illegible] रविवार को छुट्टी। काम कम है, बाद में बुला लेंगे कह कर 20 जुलाई से कैज़ुअल वरकर निकालने शुरू किये और चार दिन में निकाल दिये। कम्पनी

(बाकी पेज तीन पर)

उथल-पुथल

★गोरखपुर के बरगदवा औद्योगिक क्षेत्र स्थित ***अंकुर उद्योग*** के 600 मजदूरों ने अपनी माँगें मनवाने के लिये 15 जून को काम बन्द किया। धागा मिल ***वी.एन. डायर्स एण्ड प्रोसेसर्स*** के 300 मजदूरों ने उन्हीं माँगों के लिये 23 जून को काम बन्द कर दिया। वी.एन. डायर्स की ***कपड़ा मिल*** के 300 मजदूरों ने भी उन्हीं माँगों के लिये 28 जून को काम बन्द किया। तीन कारखानों के मजदूरों के तालमेलों द्वारा पैदा दबाव से मैनेजमेन्टें, श्रम विभाग, प्रशासन कानूनों का पालन करने को तैयार हुये। काम के घण्टे 8 करने, सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देने, साप्ताहिक छुट्टी तथा अर्जित अवकाश देने आदि पर 13 जुलाई को समझौते के बाद तीन कारखानों में उत्पादन आरम्भ हुआ। ★भटिण्डा में ***गुरु गोविन्द सिंह तेल शोधक कारखाना*** का निर्माण ठेकेदारों के जरिये रखे 15 हजार मजदूर कर रहे हैं। रविवार, 28 जून को अत्याधिक गर्मी में कार्य और फिर उपचार में लापरवाही से एक मजदूर की मृत्यु हो गई। मजदूरों का गुस्सा फूट पड़ा। कम्पनी प्रबन्धन और प्रशासन ने चार जिलों की पुलिस और कमाण्डो दस्तों को 15 हजार मजदूरों से निपटने के लिये बुला लिया। कम्पनी ने मृत मजदूर के परिवार को 4½ लाख रुपये भी दिये हैं। (जानकारियाँ 'बिगुल', 69 बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज, लखनऊ-226006 के जुलाई 09 अंक से)

★उत्तरांचल के हलद्वानी में ***सुशीला तिवारी अस्पताल*** के 18 दिहाड़ी श्रमिकों ने पक्के किये जाने के लिये मई 09 में कदम उठाने आरम्भ किये। श्रम विभाग और अस्पताल प्रबन्धन मुद्दे को टालते रहे। टालमटोल से तंग आ कर 7 जुलाई को श्रमिकों ने सामुहिक आत्महत्या की धमकी दी। सरकारी अधिकारी 10 जुलाई को फिर आश्वासन दे कर धरना स्थल से मजदूरों को उठाने लगे तो 18 अस्पताल श्रमिकों ने जहर खा लिया। ★उत्तर प्रदेश के कानपुर में ***एल एम एल स्कूटर*** फैक्ट्री में दो वर्ष से जारी तालाबन्दी तथा ***जे के*** व अन्य कारखानों के मजदूर श्रम कार्यालय में तारीख पर तारीख भुगतते रहे हैं। एक हजार मजदूर 15 जुलाई को श्रम कार्यालय के मुख्य द्वार पर एकत्र हुये तो श्रम आयुक्त दूसरे द्वार से खिसकने लगा। मजदूरों का गुस्सा बड़े साहब तथा छोटे साहबों पर फूटा। सरकार ने मजदूरों पर हत्या का प्रयास, लूट आदि की धारायें लगा कर गिरफ्तारियाँ की हैं। (जानकारी 'हमारी सोच', जी-250 लाजपतनगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद के जुलाई अंक से)

★दक्षिण कोरिया में प्रमुख वाहन निर्माता ***स्साँगयोंग*** फैक्ट्री पर मजदूरों का कब्जा 22 जुलाई को भी जारी था। नई मैनेजमेन्ट ने 5000 स्थाई मजदूरों में से 3000 की छँटनी की और उनको कैजुअल वरकर के तौर पर रखने की फिराक में थी। आठ सौ मजदूरों ने फैक्ट्री पर कब्जा कर लिया। काफी हिंसा के बाद भी नई मैनेजमेन्ट फैक्ट्री पर नियन्त्रण नहीं कर सकी, बल्कि वहाँ से खदेड़ दी गई। बख्तरबन्द गाड़ियों में सशस्त्र पुलिस हैलिकॉप्टरों की सहायता से मजदूरों को फैक्ट्री से खदेड़ने की कोशिश कर रही है। ★कनाडा में मुख्यालय और 154 देशों में गतिविधियों वाली ***नोरटेल*** कम्पनी दिवालिया हो गई है। फ्रान्स में नोरटेल की फैक्ट्री बन्द होने से बेरोजगार हुये मजदूरों ने फैक्ट्री पर 15 जुलाई को कब्जा कर लिया और क्षतिपूर्ति नहीं करने की स्थिति में फैक्ट्री उड़ा देने के लिये कई स्थानों पर गैस सिलेन्डर लगा दिये। ★फ्रान्स में ही दिवालिया हुई वाहनों के पुर्जे बनाती ***न्यू फैबरिस*** फैक्ट्री पर मजदूरों ने 26 जुलाई को कब्जा कर लिया और क्षतिपूर्ति के लिये दबाव डालने के वास्ते फैक्ट्री में गैस सिलेन्डर लगा कर उड़ाने की धमकी दी। (जानकारी < antoniamautempo@gmx.net > से)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुदित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011